विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

शासन सदैव नम्रता से नहीं चलता, अपितु यदाकदा कठोरता दिखानी भी आवश्यक होती है

देश में लोकतंत्र कहने को है बल्कि तंत्र कुछ और ही है न तो पूर्ण प्रजातंत्र है और न ही पूर्ण तानाशाही, और न ही कोई अन्य शासन व्यवस्था जैसे समाजवाद, सामंतवाद, तथा साम्यवाद आदि। प्रजातंत्र अथवा लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक के जहाँ कुछ अधिकार होते हैं वही कुछ उत्तरदायुत्व भी निभाने पड़ते हैं। देश में प्रत्येक नागरिक अधिकारों की लड़ाई तो लड़ता है, आंदोलन करता है और शासन से अधिकार छीन लेने में समथ भी हो जाता है, परन्तु आंदोलन के समय हुए कार्य के नुकसान की भरपाई कभी नहीं होती ? मेरे विचार से वर्तमान शासन व्यवस्था खिचड़ी/घालमेल है जिसकी अनुशंसा संबिधान में शायद ही की गयी है?

आज़ादी के काफी समय बाद तक बहुत कुछ ठीक चला। शनैः शनैः दुष्प्रवत्तियाँ सिस्टम में प्रवेश करती चली गयी। भ्रष्टाचार, अशिष्ट संवाद, सदन में ऊधम ऐसा कि कुछ भी सुनायी न पड़े आम दृश्य हैं। ऐसे दृश्य टेलीविज़न पर भी प्रसारित होते दिखाई देते हैं जिनेह दुनियां देखती है, और भिन्न-भिन्न प्रकार से उन पर टिप्पणी कर मसालेदार बनाकर सबको परोस देती है। सदन के अध्यक्ष को मैं अनेक बार निरीह अवस्था में देखता हूँ उनके निर्देश का सदस्य पालन नहीं करते अनदेखी कर मखौल उड़ाते प्रतीत होते हैं। देश के प्रधान मंत्री सब सहनशीलता से टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं। ऐसी दयनीय स्तिथि में भी अध्यक्ष मार्शल बुलाकर अनुशासनहीन सदस्य को सदन से बाहर करवाने की हिम्मत नहीं जुटा पाते।

ऐसी क्या मजबूरी है सरकार की? अरे प्राइमरी स्कूल का अध्यापक ही अनुशासन हीनता पर छात्र को कक्षा से बाहर निकाल देता है। देश में बिना अनुशासन कोई व्यवस्था नहीं चल सकती। घर परिवार भी व्यवस्थित नहीं रह सकते। प्रधानमंत्री को कोई चोर कहे और उनकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया न हो आश्चर्य है लोक तंत्र का। समाज में बहुधा ऐसी दशा में मारपीट पर उतरना बहुत आम बात है। इस पूरे प्रकरण में अनर्गल बयानबाजी और शोर में प्रमुख कांग्रेस लीडर राहुल गाँधी और उनके अनुयाई होते हैं।

लगता है वर्तमान सरकार ने पूर्व कांग्रेस सरकार की बड़े घोटालों की फाइलें खोल दी हैं क्योंकि उन फाइलों पर कतिपय टेलीविज़न चैनलों ने विडिओ बनाकर अपलोड कर दिए हैं। वर्ष 2004 से 2014 तक के तत्कालीन शासन अवधि में सभी घोटालों का कुल आंकलन लगभग 46 ख़रब रुपये से भी अधिक बताया गया है जो चौकाने वाला है। मेरे विचार से अंक 46 के बाद 12 शुन्य लगाने होंगे अंकों में बताने के लिए? इतनी बड़ी घोटाले की राशि ऑडिटर जनरल ऑफ़ इंडिया को भी नजर नहीं आयी और कोई खबर मीडिया में पढ़ने को नहीं मिली। लेकिन अब समझ आया ऐसे बड़े भ्रष्टाचारों के आंकलन के लिए सरकार को सी बी आई, एनफोर्समेंट निदेशालय और आयकर विभाग की सयुंक्त कार्यवाही क्यों करानी पड़ती है। समयानुसार यदि ऑडिट तत्काल सही रिपोर्टिंग कर दे तो ऐसे बड़े घोटाले उसी समय निपटाए जा सकते हैं। बाद में घोटाले रिपोर्ट होने पर तत्कालीन प्रधानमंत्री, वित्त मंत्री और सम्बंधित विभाग और ऑडिट विभाग के अफसर मुख्य रूप से दोषी ठहराए जायेंगे।

देश की जनता आजादी के पचास और साठ के दसक की अपेक्षा अब कहीं अधिक शिक्षित और जागरूक है वर्तमान में लेखक को लगता है कि यह पूरा खेल आगामी लोकसभा चुनाव् के परिपेक्ष में खेला रहा है। सत्तागत पार्टी भारी बहुमत से श्री मोदी जी के नेतृत्व में चुनाव जीतकर पुनः सत्ता में लौटने की आशा रखती है वहीं विपक्ष कांग्रेस के नेतृत्व में मोदीजी को प्रधानमंत्री बनने के सपने को तोड़ने के प्रयास में लगी है।

रामचरितमानस में महात्मा तुलसीदास ने सुंदरकांड में बहुत उत्तम प्रकरण पेश किया है। जिसका सन्दर्भ उदाहरण स्वरुप यहाँ देना कुछ समयाचीन होगा। लंका अभियान के समय जब हनुमान जी रात के अँधेरे में रावण के राजप्रासाद में घुसने का रास्ता तलाश रहे थे उसी समय प्रहरी लंकिनी ने उन्हे देख लिया और अपना आहार जानकर (राक्षस मांसाहारी होते हैं) उनको चोर कहकर डपटा। देखिये तुलसीदास ने उस दृश्य को कैसे लिखा है? देश के प्रधान मंत्री को तो यह अच्छी तरह याद भी होना चाहिए :–

मसक समान रूप कपि धरी, लंकहिं चलेउ सुमिरि नरहरि।
नाम लंकिनी एक निसचरि, सो कह चलेसि मोहि निंदरी।।/
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा, मोर आहार जहाँ लगी चोरा।
मुठिका एक महा कपि हनी, रुधिर वमन धरनी ढनमनी।।
पुनि संभारि उठी सो लंका, जोरि पाणिकर विनय ससंका।
जब रावनहि ब्रह्म वर दीना, चलत बिरंचि कहा मोहि चीनहा।।
बिकल होय ते कपि के मारे, तब जानेसु निश्चर संघारे।

हनुमान जी राम भक्त हैं, और देश के प्रधान मंत्री भी रामभक्त हैं। चोर कहने पर हनुमान जी की एक मुक्का मारने से प्रहरी के नांक और मुहं से जब रक्त निकल और लंकिनी को ब्रह्मा जी द्वारा रावण को दिया वर भी याद आ गया। तो क्या मोदी जी की एक मुष्टिका (प्रतीकात्मक) अच्छे धुरंधरों को कम से कम तीन चार पीढ़ीओं पीछे की याद नहीं करा सकती ? अब निर्णय मोदी जी पर निर्भर है कि वे कब ऐसा निर्णय लेते हैं और लेते भी हैं अथवा नहीं ? रामचरित मानस में हनुमान जी का यह दृष्टांत उन्हें स्मरण अवश्य होगा ऐसा मेरा निश्चित मत है। मैं मानता हूँ वे सही अवसर पर ऐसी हनुमान समान मुष्टिका का प्रहार चोर कहने पर अवश्य करेंगे। दूसरी तरफ वे कोमल हृदय भी हैं, क्षमा मांगनें पर माफ़ी भी दे सकते हैं।

देश में वर्तमान राजनैतिक खेल के कई आश्चर्यजनक पहलू हैं। यह पूरा खेल सत्ता पक्ष और विपक्षी पार्टिओं के बीच खेला जा रहा है, जहाँ सम्पूर्ण विपक्ष इकठ्ठा होकर कांग्रेस की कमान में भारतीय जनता पार्टी के ऊपर अलोकतांत्रिक तरीके से सरकार पर प्रहार करती नजर आती है। यह सभी खेल प्रिंट मीडिया में कभी पढ़ने को नहीं मिलता, बल्कि सोशल मीडिया और विशेष रूप से यू ट्यूब पर पक्ष और विपक्ष दोनों विडिओ बना कर जनता को अवगत कराने के साथ मनोरंजन करते अधिक नजर आते हैं। सभी जानकारी सोशल मीडिया पर ही अधिकांशतः केन्द्रित रहती है जो विषय सदन में सम्बाद से सुलझने चाहिए विपक्ष सामूहिक रूप से उन्हें सड़कों और विदेशों की धरती पर सुलझाने के प्रयास का रहा है प्रमुख रूप से यूट्यूब पर। चूंकि आरोप प्रत्यारोप सभी यू ट्यूब पर ही अपलोड किये जाते हैं, पाठक को अपना खुद का विश्लेषण करना पड़ता है, सही और गलत निर्धारण के लिए। यहाँ एक बड़ा प्रश्न है कि यदि विपक्ष में बैठी कांग्रेस पर उनके समय किये विभिन्न घोटालों पर जिनको वर्तमान सरकार उचित और सही मानती है तो उन पर पुलिस और न्यायिक कार्यवाही करने में केंद्र सरकार की हिचकिचाहट क्यों और देरी किस कारण ? वर्ष 2004 से 2014 तक समय कांग्रेस पार्टी सरकार में थी और डॉ. मनमोहन सिंह प्रधान मंत्री थे।

ऐसे में सोनियां गाँधी के ऊपर हमला क्यों ? भारत सरकार में एक ऑडिट विभाग भी होता है उस विभाग ने अपनी ऑडिट रिपोर्ट में क्या वे सब आरोप या भ्रष्टाचार उजागर किये ? यदि नहीं तो सबसे पहले उन अधिकारिओं को जबाबदेही बनाना उचित होगा। यदि ऑडिट विभाग ने भुगतान करते समय कोई सवाल नहीं उठाये तो फिर घोटालों में उस विभाग की संलिप्तता भी संदेह के घेरे में बनती है ?

दूसरा प्रश्न है कि सम्बंधित सरकारी विभाग ऐसी कमिओं को प्रेस को अथवा रिपोर्टर को क्यों नहीं मुहैया कराते, जिससे अखबार के माध्यम से आम जनता भी अवगत हो सके। देश की जनता आजादी के पचास और साठ के दशक की अपेक्षा अब कहीं अधिक शिक्षित और जागरूक है वर्तमान में लेखक को लगता है कि यह पूरा खेल आगामी लोकसभा चुनाव के परिपेक्ष में खेला रहा है। सत्तागत पार्टी भारी बहुमत से श्री मोदी जी के नेतृत्व में चुनाव् जीतकर पुनः सत्ता में लौटने की आशा रखती है वहीं विपक्ष कांग्रेस के नेतृत्व में मोदीजी को प्रधानमंत्री बनने के सपने को तोड़ने के प्रयास में लगी है। यहाँ यह निश्चित है कि यदि विपक्ष अपने उद्देश्य में सफल हो जाता है तो आगे सरकार की वही हालत की सम्भावना बन सकती है जैसी वर्ष 1977 से 1980 के बीच में जनता पार्टी की सरकार की बनी थी। प्रधान मंत्री के पद के लिए अनेक दावेदारों में सिर और फिर मुहं फुटब्बल होकर किसी भी समय सरकार बिखरने की आशंका बनी रहेगी। हां एक दशा में सभी वर्तमान विपक्षी पार्टियां डॉ. मनमोहन सिंह को यदि प्रधानमंत्री बनाने पर सहमत हो जायं, तो उनकी अब तक की प्रवर्ति और प्रकृति के कारण सभी पार्टियां अपने अपने उद्देश्य साधने में सफल भी हो सकती हैं। भविष्य बताएगा कि देश की जनता क्या फैसला करती है ?

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर-राज.)

30 अप्रैल, ''मन की बात'' की सौ वीं कड़ी के प्रसारण पर विशेष

जन-मन की भावनाओं में झलकता आलोक

कलराज मिश्र

'मन की बात' जीवन से जुड़े अनुभवों का एक तरह से गान है। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि मैंने इसे प्रसारित होने के बाद से ही निरंतर सुना है और यह महसूस किया है कि इसमें प्रधानमंत्री जी नरेन्द्र मोदी ने सनातन मूल्यों को एक तरह से पोषित किया है। सनातन का अर्थ है 'नित्य नूतन'। इसमें जड़ता के लिए कोई स्थान नहीं है।

'मन की बात' देश में हो रही प्रगति से अवगत कराता है, उन लोगों के जीवन को सार्वजनिक करता है जिन्होने कुछ अनूठा-अपूर्व किया है और इसके साथ ही जीवन में जो कुछ परिवर्तन आ रहे हैं, उनको सम्मिलित करके भविष्य की एक दिशा का निर्माण करने वाला रेडियो कार्यक्रम है।

मैं यह भी मानता हूँ 'मन की बात' जीवन से जुड़े आदर्शों का निमार्ण करने वाली देशभर में यत्र-तत्र बिखरी हमारी मानवीय धरोहर, जीवन दर्शन और आपदा-विपदा से जुड़े प्रश्नों के आलोक में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के वह वक्तव्य है जिसमें जीवन की सकारात्मकता को सुना और गुना जा सकता है। देश भर के लोगों का प्रतिनिधित्व इसमें होता है, कोने-कोने के लोगों की राय, उनकी बातों, उनके अनुभवों और आशा उम्मीदों का स्वर इसमें घुला हुआ है।

कल की बात लगती है जब यह कार्यक्रम रेडियो द्वारा प्रारम्भ हुआ था। यह 3 अक्टूबर 2014 का दिन था, जब 'मन की बात' कार्यक्रम का पहला प्रसारण हुआ था। बाद में 2015 में वह दिन भी आया जब इसमें अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी इसमें भाग लिया था। देखते ही देखते इसकी सौंवी कड़ी प्रसारण की घड़ी भी आई है। सबसे बड़ी बात जो इस कार्यक्रम की है, वह यह है कि इसमें नागरिकों से प्रधानमंत्रीजी जी का सीधा संवाद होता है। देशभर के लोगों का इससे सीधा जुड़ाव इस रूप में भी है कि भारतीय लोक प्रसारक, प्रसार भारती द्वारा 'मन की बात' का अनुवाद और प्रसारण 52 भाषाओं और बोलियों में किया जाता है। इसमें ग्यारह विदेशी भाषाएं भी सम्मिलित है।

देश के सबसे बड़े लोकतांत्रिक राष्ट्र भारत के प्रधानमंत्री अपने इस कार्यक्रम के जरिए अपना मंतव्य ही लोगों तक नहीं पहुंचाते बल्कि राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी का एक तरह से आह्वान करते हैं। मुझे लगता है 'मन की बात' एक दूरदर्शी और स्वप्नदृष्टा प्रधानमंत्री की नागरिकों के प्रति अपनी जवाबदेही समझते हुए किया जाने वाला वह संवाद है, जिसमें श्रव्य मीडिया की सुदूर पहुंच को समझते हुए उसके जरिए जन-मन में रचने-बसने की मंशा निहित है। कोई कहता है कि रेडियो के दिन अब रहे नहीं, उनको 'मन की बात' वह जवाब है जिसने यह साबित किया है कि यदि विषय जनता से जुड़े हों, खुद को उसमें सम्मिलित कर समावेशी सोच से संवाद की पहल हो तो लोग उसमें रूचि लेते हैं। रविवार को यह जब प्रसारित होता है लोग खासतौर से इसे सुनते हैं।

रेडियो श्रव्य मीडिया है। इसका प्रमुख उद्देश्य है सूचना, शिक्षा और मनोरंजन। पर किसी एक ही कार्यक्रम में इन तीनों का समावेश कहीं हुआ है तो वह भी 'मन की बात' में ही हुआ है। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि 'मन की बात' कार्यक्रम में कोरी सूचनाएँ नहीं हैं, शिक्षा है-जीवन का आलोक पथ है और मन का स्वस्थ रंजन है। जिस तरह से इसे प्रधानमंत्री श्री मोदी सहज हल्के-फुल्के बतियाते हुए अंदाज में पेश करते है, उससे पर्यावरण, कोविड, जलवायु परिवर्तन, हर घर तिरंगा, स्वच्छ भारत, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आदि बहुत सारे विषय सहज-संप्रेषित होते है।मुझे याद है, इसी कार्यक्रम की एक कड़ी में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विकलांगों के स्थान पर 'दिव्यांग' शब्द देश को दिया था। जो किसी रूप में शारीरिक रूप में अशक्त है, उसके पास ईश्वर ने कुछ विशेष आम-जन से पृथक दिया है। इसलिए ऐसे व्यक्ति विकलांग नहीं दिव्यांग हैं। ऐसे ही और भी लोक से जुडे शब्द, संवेदनाओं को निरंतर इस कार्यक्रम ने हमसे साझा किया है। इसलिए यह देश ही नहीं विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रमों में शुमार हुआ है।

'मन की बात' को सुनते कई बार मुझे यह भी लगा है कि यह भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ा सम-सामयिक आख्यान है। ऐसा जिसे सुनने, उसमें रमने का मन करता है। हमारे वेद, पुराण और उपनिषदों में ज्ञान को सबसे ऊँचा स्थान दिया गया है। उसे परम पवित्र माना गया है। ज्ञान का अर्थ किसी बात की सिर्फ बाहरी जानकारी नहीं है। निरंतर चिंतन के द्वारा तत्व की गहराई में जाकर, उसमें उतरकर प्रत्यक्ष अनुभव को ज्ञान कहा गया है। इसे जन-विषयों के प्रति रूचि के जरिए प्राप्त किया जाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने व्यस्त समय के बावजूद जनता से जुड़े विषयों में रूचि रखने के कारण इस कार्यक्रम को सतत जन-संवाद के लिए ही अपनाया है। आप आम जन से किन्ही विषयों पर राय लेना, उस पर विमर्श करना, कहीं किसी स्थान पर अद्वितीय कार्य करने वाले लोगों के बारे में जानकारी एकत्र कर उस पर सार्वजनिक चिंतन की यह अनूठी पहल है। मैं इसे कई बार प्रधानमंत्री जी की 'रेडियो डायरी' के रूप में सुनता और गुनता हूँ। किसी व्यक्ति के चिंतन के, उसके जन सरोकारों के कितने-कितने आयाम हो सकते हैं, 'मन की बात' उसकी मिसाल है। मैं समझता हूँ, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के मन की जिज्ञासाओं, जन-जन से जुड़े मन को टटोलने और निरंतर नया कुछ जानने की प्रेरणा ही 'मन की बात' है। यह देश को उसके लोगों को, उनके विचारों को, भूगोल को, संस्कारों को, विज्ञान और धर्म आदि को युगीन संदर्भों में समझते हुए उन पर संवाद की अनूठी पहल है।

हमारे यहाँ ब्रह्म सूत्रों का आरम्भ ही 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' से होता है। पूर्व मीमांसा का भी पहला सूत्र 'अथातो धर्म जिज्ञासा' है। धर्म वह जिसे धारण किया जाए। वह जिसमें विरासत में जो विचार-दृष्टि हमें मिली, उसमें नवीन संस्कारों-विचारों और जीवन से जुड़े अनुभवों को मिलाते हुए भविष्य के पथ पर आगे बढ़ा जाए। 'मन की बात' को इसलिए मैं 'योगःकर्मसु कौशलम्' की संज्ञा देता हूँ। माने कर्मों में कौशल ही योग है। यह एक देश के प्रधानमंत्री के देश को जानने-समझने और तदनुरूप राष्ट्र की नीतियाँ, उसे आगे बढ़ाने, जन-जन के उत्थान के कर्म-कौशल का योग है। यह सिर्फ कार्यक्रम नहीं श्रव्य मीडिया का वह आलोक है जिसे सनातन संस्कारों में अनुभूत किया जा सकता है।

एतरेय ब्राह्मण का बहुश्रुत मंत्र है- चरैवेति, चरैवेति। जो सभ्यताएं चलती रहीं वे आगे बढ़ी। जो थम गई, उनका विकास भी रूक गया। पानी एक ही स्थान पर पड़ा रहता है तो संड़ांध मारने लगता है। जल के बहने में ही उसकी सार्थकता है। इसीलिए बुद्ध ने भी कहा 'चरथ भिक्खवे चरथ' माने भिक्षुओं चलते रहो। जो चलता है उसे ही जीवन का मधु मिलता है। डा. मंगलदेव शास्त्री ने 'चरैवेति' को श्रमगान कहा है। मैं यह मानता हूं, 'मन की बात' भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का श्रमगान है। मैंने 'मन की बात' के सारे कार्यक्रम सुने हैं, उनकी चर्चा नहीं करूंगा। पर इतना जरूर कहूंगा कि यह सशक्त भारत के दृष्टिकोण का मूलाधार है। देश की राष्ट्रीय और वैश्विक सफलताओं को उजागर करते हुए नागरिकों में गौरव की अनुभूति पैदा करते हुए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की ओर उन्हें उन्मुख करने का संवाद-गान है। यह महज रेडियो कार्यक्रम नहीं, जन-जन की भावनाओं, उनके उद्गारों में झलकता आलोक है।

–कलराज मिश्र,
राज्यपाल, राजस्थान

राज्य के 62 स्कूल पांचवीं से आठवीं कक्षा में क्रमोन्नत

बीकानेर, (निसं) नए शिक्षा सत्र 2023-24 में 23 जिलों के 62 राजकीय प्राथमिक स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को अपना स्कूल नहीं बदलना पड़ेगा। शिक्षा विभाग ने नया सत्र शुरू होने से पहले राज्य के 62 प्राइमरी स्कूलों को आठवीं में क्रमोन्नत करने की स्वीकृति जारी कर दी है। प्रारंभिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल ने इस संबंध में आदेश जारी किए हैं। क्रमोन्नत होने वाले इन स्कूलों में शिक्षा सत्र 2023-24 से कक्षा 6 में एडमिशन की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

प्रारंभिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल ने स्पष्ट किया है कि पर्याप्त नामांकन होने पर सातवीं और आठवीं कक्षा भी एक साथ शुरू की जा सकेगी। नए क्रमोन्नत स्कूलों में पदों का आवंटन शिक्षा विभाग में उपलब्ध अधिशेष पदों में से स्टाफिंग पैटर्न के निर्धारित प्रावधानों के मुताबिक किया जाएगा। जिन स्कूलों में नामांकन की अपेक्षा शिक्षकों की संख्या अधिक है। उन स्कूलों से लेवल दो के तीन शिक्षकों को क्रमोन्नत स्कूलों में लगाया जाएगा। प्रारंभिक शिक्षा निदेशक ने इस संबंध में संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को निर्देश जारी किए हैं।

शिक्षा विभाग ने पिछले दस दिन में राज्य के 216 स्कूलों को क्रमोन्नत करने के आदेश जारी किए हैं। इन स्कूलों में नए शिक्षा सत्र से विद्याथिर्यों को प्रवेश मिलेगा। इससे पूर्व 18 अप्रैल को शिक्षा निदेशालय ने राज्य के 156 स्कूलों को पांचवी से आठवीं में क्रमोन्नत करने के आदेश जारी किए थे। शिक्षा विभाग की ओर से इन 216 स्कूलों को पांचवी से आठवीं में क्रमोन्नत होने से इन स्कूलों में पढ़ने वाले करीब 15 हजार विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। इन विद्यार्थियों को आगे की पढ़ाई के लिए अब स्कूल नहीं बदलना पड़ेगा। यदि वर्तमान स्कूल में ही अब आठवीं तक की शिक्षा हासिल कर सकेंगे राज्य के 23 जिलों के क्रमोन्नत 62 स्कूलों की सूची में सबसे अधिक बीकानेर के छह स्कूल शामिल है। जिसमें शहरी क्षेत्र के तीन स्कूल है। शहरी क्षेत्र में अंबेडकर कॉलोनी, कोरियों का बास नंबर दो, चोपड़ा बाड़ी गंगाशहर स्थित प्राइमरी स्कूल को आठवीं में अपग्रेड किया गया है। वही ब्लॉक स्तर पर कोलायत, लूणकरणसर और नोखा का एक-एक स्कूल क्रमोन्नत हुआ है।

विश्व पशु चिकित्सा दिवस

पशु चिकित्सा में सुधार, समय की मांग

मरियम अबुहैदरी

आज विश्व पशु चिकित्सा दिवस है। आज के दिन हम बेबस एवं मासूम पशुओं के जीवन रक्षकों के महान कर्तव्य का उत्सव मनाते हैं। एक पशु कार्यकर्ता के रूप में मैंने जयपुर में निम्नस्तर पशु चिकित्सा व देखभाल के हृदयविदारक परिणामों को देखा है, मैं पशु चिकित्सा शिक्षा और सरकारी भर्ती मानकों में सुधार की आवश्यकता पर पर्याप्त जोर देना चाहती हूँ। सरकारी पशु चिकित्सकों के साथ मेरे व्यक्तिगत अनुभव बहुत दुखद रहे हैं, और अब समय है कि हम इस क्षेत्र में पशु कल्याण और करुणा को प्राथमिकता दें।

पशु चिकित्सा पेशे में व्यावहारिक ज्ञान और सहानुभूति की कमी के कारण जानवरों को पीड़ित और मरते देखना बेहद निराशाजनक है। यह विचित्र है कि कई लोग इस क्षेत्र को केवल आय का एक साधन मानते हैं, एक सुपर-सिक्योर सरकारी नियुक्ति।

पशु चिकित्सा पेशे में पाखंड व्याप्त हो चुका है। हमें इस पाखंड के बारे में विचार करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पशु चिकित्सक पशु रोगों का जानकार, जानवरों के प्रति दयालु और संवेदनशील हों। यह समय है कि सरकार अपने पशु चिकित्सकों के समूह के बीच पशु कल्याण और करुणा को प्राथमिकता दे। तभी हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि पशु चिकित्सक अपनी शपथ पूरी करने के साथ-साथ हमारे प्यारे साथियों की देखभाल कर पाएँगे।

क्या यह विचित्र नहीं है कि मैं अभी तक किसी सरकारी पशु चिकित्सक या पशु चिकित्सा अधिकारी से नहीं मिली हूँ जिसने जानवरों के प्रति अपने प्रेम के कारण यह पेशा चुना है। आपको लगता होगा कि ये लोग बहुत बुद्धिमान होंगे क्योंकि इन्होंने 5 साल कुछ ऐसा अध्ययन करने में खर्च किया जो वे संभवतः अपने शेष जीवन के जानवरों के प्रति अपने प्यार के लिए कर रहे होंगे। पर अफ़सोस की अधिकतर लोगो ने इसे सिर्फ़ आय स्त्रोत बना दिया है।

यह एक घटना थी जो मेरी स्मृति में अंकित है। तुंगा में एक कुत्ते को 22 बार गोली मारी गई थी, और कुत्ते का मेडिकल करने के लिए पशु चिकित्सकों की एक टीम को नियुक्त किया गया था। दो पशु चिकित्सक बेहद असभ्य थे, और मुझे उनके साथ सबसे अप्रिय अनुभव हुआ। कुत्ते की चोटें गंभीर नहीं है जब एक पशु चिकित्सक ने मुझे यह कहा तो मानो मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई,कोई यह कैसे कह सकता है यह जानते हुए कि उस प्यारे कुत्ते को 22 बार गोली मारी गई थी उन्होंने इलाज को नज़रअंदाज़ करना चुना। कुत्ते की मदद हो यह सुनिश्चित करने के लिए मुझे पशुपालन विभाग के सचिव और कुछ वरिष्ठ निजी पशु चिकित्सकों को शामिल करना पड़ा। यह सब टाला जा सकता था अगर पशु चिकित्सकों ने सिर्फ उनकी शपथ का सम्मान किया होता। टीम के एक पशु चिकित्सक डा. मयंक को उस मरते हुए श्वान की दुर्दशा के प्रति सहानुभूति थी। वह देख सकता था कि मुझे व उस श्वान को किस कदर परेशान किया जा रहा है। यदि वह उस दिन मेरी मदद ना करते तो यह मेडिकल रिपोर्ट भी पहले की कई अन्य रिपोर्ट्स की तरह ख़ाली होती, आखिरकार, कुछ अच्छे लोग भी हैं जो क्लोन किए जाने के योग्य हैं! गलत मेडिकल या पोस्टमार्टम में क्लीन चिट; के आधार पर न्यायपालिका को गुमराह किया जा रहा है। जानवरों के शरीर पर गंभीर घाव के बावजूद क्रूरता का कोई निशान नहीं? आख़िर किसने हमे अंधा बनाया है पैसा या इस समाज ने? दुर्भाग्य से, कुत्ते ने अपनी चोटों के कारण दम तोड़ दिया, लेकिन इस अनुभव ने मुझे भयाक्रांत व निराश छोड़ दिया। पूरी कवायद तनावपूर्ण थी। इस तरह के निराशाजनक अनुभव के कारण, मैं सुरक्षित रूप से कह सकती हूं कि सरकारी पशु चिकित्सकों में जानवरों की उचित देखभाल करने के लिए जुनून और समर्पण की कमी है। इसके विपरीत, कुछ निजी पशु चिकित्सकों ने इस पेशे को जानवरों के लिए अपने प्राथमिक प्रेम से चुना है, और उनका समर्पण वास्तव में प्रेरणादायक है।

मैंने प्रत्यक्ष रूप से देखा है कि कैसे अन्य देशों की तुलना में भारत की पशु चिकित्सा शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। हमें भारत में पशु चिकित्सा शिक्षा में सुधार कर चिकित्सकों को पशुओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और दयालु बनाना चाहिए। यह अपर्याप्त प्रशिक्षण न केवल कंपाउंडरों की प्रभावी देखभाल प्रदान करने की क्षमता में बाधा डालता है बल्कि पशुओं के स्वास्थ्य और कल्याण को भी जोखिम में डालता है। पशु चिकित्सा कंपाउंडरों को एक एसा प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए जिसमें पशु चिकित्सा नर्सिंग कौशल की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल हो, जिसमें बुनियादी पशु प्राथमिक चिकित्सा, दवाओं का आँकलन और पशु के महत्वपूर्ण शारीरिक संकेतों की निगरानी शामिल हो। इसके अलावा, निजी पशु चिकित्सकों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानना आवश्यक है, जो जानवरों के लिए अपने प्यार और करुणा से अपने करियर को आगे बढ़ाने का विकल्प चुनते हैं। निजी पशु चिकित्सकों के पास अक्सर अधिक संसाधनों और उपकरणों तक पहुंच होती है, जिससे वे जानवरों को गुणवत्तापूर्ण देखभाल प्रदान करने में सक्षम हैं। यदि सरकारी पशु चिकित्सकों की भर्ती प्रक्रिया में शैक्षणिक योग्यता के साथ व्यावहारिक ज्ञान और सहानुभूति को प्राथमिकता नहीं दी गई तो हम मुश्किल में होंगे। जयपुर में मेरा अनुभव एक ऐसे राष्ट्र के इरादों के बारे में विवाद का विषय बन गया है जो जानवरों के इलाज पर गर्व करता है, जिन्हें अक्सर पौराणिक कथाओं में दयालुता के साथ चित्रित किया जाता है। ज़रूरत है कि हम अपने बच्चों को यह बताये कि पशु चिकित्सा को तभी चुने, जब उन्हें लगे कि वह उनकी सेवा के लिए पूर्ण रूप से समरपित हो पायेंगे।

जिस तरह हम छात्रों को मेडिसिन की पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करते हैं, उसी तरह हमें उन्हें पशु चिकित्सा विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए। यह क्षेत्र एक पूर्ण और पुरस्कृत कैरियर विकल्प प्रदान करता है जो व्यक्तियों को जानवरों और उनके मालिकों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने की ताकत देता है।

इस क्षेत्र को विकसित करने और छात्रों को इसे आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सरकार, भारतीय पशु चिकित्सा परिषद (वीसीआई) और निजी संगठनों को ख़ास ध्यान देना चाहिए। निस्संदेह, यह सब सरकार द्वारा पशु चिकित्सा शिक्षा और भर्ती मानकों में पशु कल्याण और करुणा को प्राथमिकता देने और छात्रों को एक कैरियर विकल्प के रूप में पशु चिकित्सा विज्ञान और नर्सिंग को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ शुरू होता है। हमें व सरकार को जानवरों की देखभाल करने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने वाले पशु चिकित्सकों की सराहना और समर्थन करना चाहिए। ऐसा करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जानवरों को वह देखभाल और करुणा मिले जिसके वे हकदार हैं और साथ ही पशु चिकित्सा और पशु चिकित्सा नर्सिंग सहित हमारे समाज का एक सम्मानित और महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया जाये जिस से की आने वाली पीढ़ी भी इस पेशे को अपनी इच्छा से गर्वपूर्ण भाव से अपनाए ना की सरकारी नौकरी के लालच में।

–मरियम अबुहैदरी,
पशु अधिकार कार्यकर्ता

राशिफल

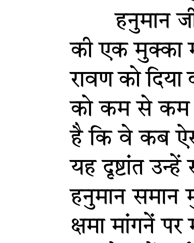

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 29 अप्रैल, 2023

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, अश्विनी नक्षत्र सांय दिन 12:47 तक, गण्ड योग दिन 10:30 तक, कौलव करण सांय 6:22 तक, चन्द्रमा दिन 12:47 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-मेष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज स्थिर योग सूर्योदय से 12:47 तक है। दुग्ध योग सूर्योदय से दिन सांय 6:22 तक है। रवियोग दिन 12:47 से आरम्भ होगा। आज सीता नवमी, श्री हरि जयन्ती, चण्डिका नवमी है। गुरू उदय रात्रि 8:58 से उदय होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:32 से 9:09 तक, चर 12:24 से 2:02 तक, लाभ-अमृत 2:02 से 5:17 तक।

राहुकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 6:54

मेष
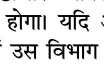
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
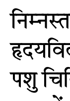
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मिथुन
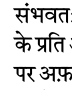
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
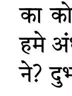
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

सिंह
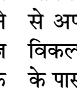
व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या
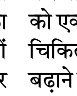
आर्थिक मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। धन हानि हो सकती है।

तुला
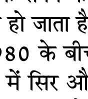
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

वृश्चिक
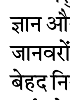
नवीन कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

धनु
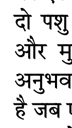
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मकर
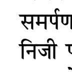
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

कुंभ
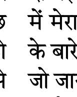
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। व्यावसायिक योजना बनेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय बढ़ेगा।

मीन
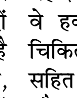
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।